अष्टादशःपाठः

# एत बालकाः

एत बालकाः ! स्वयं चलाम।

काठिन्यं दूरे करवाम।।1।।

एत नयाम नभस्तारकम्।

दूरे कुर्मश्चान्धकारकम्।।2।।

एत पर्वतानपि परिमाम।

शक्तिसमुदयं नैव जहाम।।3।।

एत सागरं प्रति गच्छाम।

जीवनकलशं ननु विभराम।।4।।

एतातुलितां शक्तिं लब्ध्वा,

पौरुषेण खलु भाग्यं बद्ध्वा।

एत विदध्म तपो नवीनम्,

पूरयेम वाञ्छाकमनीयम्।।5।।

सेवामहै जनांश्च निकामम्।

लोभं विना सुधापाः कामम्।।6।।

एत जयेम मनांसि जनानाम्

जीवनमिह सफलं बालानाम्।।7।।

एत विकुर्मो भ्रान्तिसमूहम्।

दर्शयेम नवमार्गारोहम्।।8।।

एत मङ्गलं बहु वितरेम।

विश्वमनल्पं लघु कलयेम।।9।।

## शब्दार्थः

**एत** = आओ। **नयाम** = ले आयें। **अन्धकारकम्** = अंधकार को । **परिमाम=** नाप लें। **जहाम** = त्याग करें। **विभराम** = पूर्ण करें, भरें। **अतुलिताम्** = अतुलनीय, अपरिमित। **लब्ध्वा** = प्राप्त कर। **बद्ध्वा** = बाँधकर। **विदध्म** = विधान करें। **पूरयेम** = पूर्ण करें। **वाञ्छाकमनीयम्** = इच्छित सुन्दर कामना को। **सेवामहै** = सेवा करें। **निकामम्** = पर्याप्त, यथेच्छ। **सुधापाः** = अमृतपान करने वाले। **कामम्** = कामना के अनुसार। **इह** = यहाँ। **विकुर्मः** = दूर करते हैं। **दर्शयेम** = दिखायें। **नवमार्गारोहम्** = नये मार्ग पर चलना। **अनल्पम्** = सम्पूर्ण । **कलयेम** = बनावें।

## अभ्यासः

**1. उच्चारणं कुरुत पुस्तिकायां च लिखत-**

विदध्म , वाञ्छा , नभस्तारकम्

अन्धकारकम् , पौरुषेण , सेवामहै

**2. एकपदेन उत्तरत -**

(क) काठिन्यं किं करवाम ?

(ख) वयं किं परिमाम ?

(ग) किं दूरे कुर्मः ?

(घ) किं विभराम ?

**3. पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) काठिन्यं दूरं कर्तुं वयं किं करवाम ?

(ख) वयं किं नैव जहाम ?

(ग) तपः कृत्वा किं पूरयेम ?

(घ) भ्रान्तिसमूहं दूरं कृत्वा वयं किं दर्शयेम ?

**4. रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**

(क) जनानां मनांसि जयेम।

(ख) मङ्गलं बहु वितरेम।

(ग) वयं नभस्तारकं नयाम ।

**5. मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत -**

**<u>जयन्तु</u> <u>गच्छतु</u> <u>नय</u> <u>करवाम</u>**

अहं काठिन्यं दूरे <u>करवाम।</u>

(क) त्वं नभस्तारकम् .......................।

(ख) सः सागरं प्रति .........................।

(ग) ते जनानां मनांसि ....................।

**6. संस्कृते अनुवादं कुरुत -**

(क) कठिनता को हम दूर करें।

(ख) हम सब अन्धकार को दूर करें।

(ग) सागर की ओर चलें।

(घ) हम भ्रान्तियों को दूर करें।

**7. धातुः, लकारः, पुरुषं च लिखत -**

यथा-करवाम = कृ , लोट् लकार , उत्तम पुरुष।

(क) नयाम

(ग) गच्छाम

(घ) पूरयेत

**एतदपि जानीत**

- D9HX7X

'*यूरोपे संस्कृतस्य सर्वप्रथमप्रचारकः विलियम जोन्स महोदयः अस्ति।*